प्रातः क्लास 13-10-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। शिव भगवानुवाच। वह हुआ रूहानी बाप क्योंकि शिव तो सुप्रीम रूह है ना। आत्मा है ना। बाप तो रोज2 नई बातें समझाते हैं। समझो बहुत गीता सुनाने वाले सन्यासी हैं वह बाप को तो याद कर न सकें। बाबा अक्षर मुख से कब निकल न सके। यह अक्षर है ही गृहस्थ मार्ग वालों के लिये। वह तो है निवृति मार्ग वाले। वह ब्रह्मा को ही याद करते हैं। मुख से कब शिव बाबा नहीं कहेंगे। भल तुम जांच करो। समझो बड़े2 चिन्मयानन्द गीता सुनाते हैं, ऐसे तो नहीं कि वह गीता के भगवान के साथ योग लगा सकते हैं होंगे। नहीं। वह तो फिर ब्रह्म के साथ योग लगाने वाले ब्रह्मज्ञानी तत्वज्ञानी हैं। कृष्ण को कब कोई बाबा कहे यह हो नहीं सकता। कृष्ण तो गीता सुनाने वाला बाबा नहीं ठहरा ना। शिव को ही सभी बाबा कहते हैं। क्योंकि वह सभी आत्माओं का बाप है। सभी आत्मायें उनको पुकारती हैं परमपिता परमात्मा। वह है सुप्रीम। परम। क्योंकि परमधाम में रहने वाला है। तुम भी सभी परमधाम में रहते हो परन्तु उनको परमआत्मा कहते हैं, वह कब पुनर्जन्म में नहीं आते। खुद कहते हैं मेरा दिव्य और अलौकिक है। ऐसे कोई रथ में प्रवेश कर तुमको विश्व की मालिक बनने की युक्ति बतावे यह हो नहीं सकता। तब बाप कहते हैं मैं जो हूं जैसा हूं मुझे कोई भी नहीं जानते। मैं जब अपना परिचय दूं तब जान सकते हैं। यह ब्रह्म को अथवा तत्व को परमात्मा मानने वाले कृष्ण को फिर अपना बाप कैसे बनावेगा। आत्मायें तो सभी बच्चे ठहरे ना। कृष्ण को फिर पिता कैसे कहेंगे। ऐसे थोड़े ही कहेंगे कृष्ण सभी का बाप है हम सभी ब्रदर्स हैं। ऐसे भी नहीं कृष्ण को ईसर्वव्यापी है। सभी कृष्ण थोड़े ही हो सकते हैं। अगर सभी कृष्ण है, तो उसका बाप भी चाहिए। मनुष्य बहुत भूले हुये हैं। नहीं जानते हैं तब तो कहते हैं मुझे कोटों में कोऊ ही जान सकते हैं। कृष्ण को तो कोई भी जान लेंगे। सभी विलायत वाले भी उनको जानते हैं। लार्ड कृष्ण कहते हैं ना। चित्र भी है। असली चित्र तो है नहीं। भारतवासियों ने गुनकर देखते हैं इनकी पूजा बहुत होती है तो फिर गीता में भी लिख दिया है कृष्णभगवानुवाच। अभी भगवान को भला लार्ड कहा जाता है क्या। लार्ड कृष्ण कहते हैं। लार्ड का टाईटल वास्तव में बड़े आदमी को मिलता है। वह तो सभी को देते हैं। इण्डियन को बड़ा आदमी होगी तो उनको भी लार्ड कह देते। बंगाली को भी लार्ड सिन्हा कहते हैं। कृष्ण को भी लार्ड कहते हैं। अभी वह कहां बैकुण्ठ का पहला प्रिन्स, और कहां यह कलियुगी पतित मनुष्य। इसको कहा जाता है अंधे नगरी .... कोई भी पतित को लार्ड कह देते। कहां यह अभी के पतित मनुष्य, कहां शिव वा कृष्ण बाप कहते हैं मैं तुमको ज्ञान देता हूं यह फिर गुम हो जाता है' मैं ही आकर नई दुनिया स्थापन करता हूं। तो अभी अभी ही मैं ज्ञान देता हूं। मैं जब ज्ञान दूं तब ही बच्चे बनें। मेरे बिगर कोई सुनान सके। जानते ही नहीं। सन्यासी शिव बाबा को याद कर सकते हैं। तो फिर क्यों न कहे निराकार गाड को याद करो। अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा जो निराकार है उनको याद करो। कब सुना है? बहुत पढ़े लिखे मनुष्य भी समझते नहीं। अभी बाप बैठ समझाते हैं कृष्ण भगवान नहीं हैं। मनुष्य तो उनको ही भगवान2 कहते रहते हैं। कितना फर्क हो गया। बाप तो बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। वह बाप भी है टीचर भी है सुप्रीम गुरु भी है। शिव बाबा सभी को बैठ समझाते हैं। न समझने कारण त्रिमूर्ति में शिव रखते ही नहीं है। ब्रह्मा को दिखाते हैं जिसको प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं। प्रजा की रचना रचने वाला। परन्तु इनको भगवान नहीं कहेंगे। भगवान प्रजा नहीं रचते हैं। भगवान के तो सभी आत्मायें बच्चे हैं। फिर इनके द्वारा प्रजा रचते हैं। तुमको किसने एडाप्ट किया? ब्रह्मा द्वारा बाप ने एडाप्ट किया। ब्राह्मण जब बनेंगे तब ही तो देवता बनेंगे। यह बात तो तुमने कब सुनी नहीं है। प्रजापिता का भी जरूर पार्ट, एक्ट चाहिए। इतनी प्रजा कहां से आवेगी तो नहीं। कुलवंशावली भी तो हो न सके। वह कुलवंशावली ब्राह्मण कहेंगे। नाम तो सभी का लअग2 है। प्रजापिता ब्रह्मा कब आया यह तो उन्हों को भी पता नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा कहते ही तब हैं जब बाप इनमें प्रवेश करते हैं। यह नई2 बातें हैं ना। बाप खुद कहते हैं मुझे कोई भी नहीं जानते हैं। सृष्टि चक्र को भी नहीं जानते हैं तब ऋषि मुनि आदि सभी नेती2 कह कर गये हैं। —

न परमात्मा को न परमात्मा के रचना को जानते हैं। बाप कहते हैं जब मैं आकर अपना परिचय दूं तबही जाने इन देवताओं को वहां यह पता थोड़ेही पड़ता है हमने यह राज्य कैसे पाया है। इनमें ज्ञान होता ही नहीं। पद पा लिया फिर ज्ञान की दरकार ही क्या। ज्ञान चाहिए ही सदगति के लिये। यह तो सदगति को पाये हुये हैं। यह तो बहुत ही समझने की गुह्य2 बातें हैं। समझदार ही समझें। बाकी जो बूढ़ी2 मातायें हैं इनमें इतनी बुधि तो है नहीं। वह भी ड्रामाके प्लेन अनुसार हरेक का पार्ट हैं। ऐसे तो नहीं कहेंगे हे ईश्वर बुधि दो। सभी को एक जैसी ही बुधि मिल जाये तो फिर सभी ना0 बन जाये। सभी एक दो के गदी में बैठेंगे क्या। हां एम आबजेक्ट है यह बनने की। सभी पुरुषार्थ कर रहे हैं नर से ना0 बनने का। बनेंगे तो पुरुषार्थ अनुसार ना। अगर सभी हाथ उठावें हम ना0 बनेंगे तो बाबा को अन्दर में हंसी आती है। हंसी आवेगी ना। सभी एक ना0 कैसे बन सकते। नम्बरवार होते हैं ना0 दी फर्स्ट सेकण्ड थर्ड। जैसे एडवर्ड दी फर्स्ट सेकण्ड थर्ड होते हैं। भल एमआबजेक्ट यह है परन्तु खुद समझते हैं हम तो ना0 की जुती भी नहीं बन सकते हैं। चलन ऐसी है। पुरुषार्थ तो जरूर करना है। बाबा वैराईटी फूल ले आवे नम्बरवार फूल दे सकते हैं परन्तु ऐसे करते नहीं। फर्क हो जावेंगे। बाबा जानते तो हैं ना। देखेंगे कौन जास्ती सर्विस करते हैं। यह अच्छा फूल है, यह भी फूल है। पीछे नम्बर वार तो होते हैं ना। बहुत पुराने भी बैठे हैं। परन्तु उनसे नये2 भी बहुत अच्छे अच्छे फूल हैं। कोई खिट-खिट ईर्ष्या आदि इनमें नहीं हैं। बहुतों में कुछ न कुछ खामियां जरूर हैं। सम्पूर्ण तो कोई भी नहीं कह सकेंगे। 16कला सम्पूर्ण बनने लिये बहुत समय पड़ा है। अभी कोई सम्पूर्ण बन न सके। ब्रह्मा को भी सम्पूर्ण नहीं कह सकेंगे। हां बनने का है। अभी तो अच्छे2 बच्चों में ईर्ष्या बहुत ही खराब है। खामियां तो है ना। बाबा जानते हैं सभी किस2 प्रकार के पुरुषार्थ कर रहे हैं। दुनिया वाले क्या जाने। वह तो कुछ भी नहीं समझते। बहुत ही थोड़े समझते हैं। गरीब झट समझ जाते हैं। बेहद का बाप आया हुआ है पढ़ाने। उस बाप को याद करने से हमारे पाप कट जावेंगे। हम बाप के पास आये हैं। बाबा से नई दुनिया का वरसा जरूर मिलेगा। बाप जानते हैं नम्बरवार तो होते ही हैं। 100 से लेकर एक नम्बर तक। परन्तु बाबा को जाना, ज्ञान सुना तो स्वर्ग में जरूर आवेंगे। 21 जन्मों लिये स्वर्ग में आना कोई कम है क्या। ऐसे तो नहीं कोई मरता है तो कहेंगे यह 21 जन्मों के लिये स्वर्ग गया। नहीं। स्वर्ग है कहां। कितने मिस अन्डर स्टैन्ड शास्त्रों द्वारा कर दी है। बड़े2 अच्छे अच्छे लोग भी कहते कि फलाना स्वर्ग पधारा। स्वर्ग कहते किसको है अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। जैसे कि टटू। रावण के ऊपर भी गदहे का सीसा देते हैं ना। रावण क्या चीज़ है यह भी तुम जानते हो। और कोई भी मनुष्य नहीं जानते। हो तुम भी मनुष्य परन्तु तुम ब्राह्मण बने हो। अपने को ब्राह्मण ही कहलाते हो। तुम ब्राह्मणों का एक बाप दादा। सन्यासियों से पूछना चाहिए जो भगवानुवाच है कि देह सहित देह के सभी सम्बन्ध को छोड़ मामेकं याद करो। क्या यह कृष्ण कहते हैं मामेकं याद करो? तुम कृष्ण को याद करते हो। कभी हां नहीं कहेंगे। वहां ही पत्थर हो जावेंगे। परन्तु विचारी अबलायें जाती है वह क्या जाने। वह अपने फालोअर्स के आगे कितना क्रोधी हो जाते हैं। दुरवासा नाम भी है ना। उन्हों में अहंकार बहुत रहता है। फलोअर्स हैं ढेर। भक्ति का राज्य है ना। उनसे पूछने की कोई में ताकत न रही है। नहीं तो उनको कह सकते हैं तुम तो शिव बाबा की पूजा करते हो। अभी भगवान किसको कहेंगे। क्या ठिक्कर भित्तर में भगवान है। फिर पूजा किसकी करते हो। आगे चल इन सभी बातों को समझेंगे। अभी नशा कितना है। है सभी पुजारी। पूज्य नहीं कहेंगे। पूज्य कब पुजारी हो न सके। शंकराचार्य जो सन्यासियों को हेड है वह खुद ही पुजारी है वह पूज्य हो न सके। पुजारी तो शिव की पूजा कर रहे हैं फिर शिवोहम कैसे कहते हो। समझ कुछ भी नहीं है। बाप भी कहते मेरे कोई विरला ही जानते हैं। मैं जा हूं जैसा हूं तुम बच्चों में भी विरले स्पेशल रीति जानते हैं, उनको अन्दर में बहुत ही खुशी रहती है। यह तो समझते हैं बाबा से हमको स्वर्ग की बादशाही मिलती है। कुबेर के खजाने से मिलती है। अल्लाअवलदीन का भी खेल दिखाते हैं। ठका करने से खजाना निकल आता है। बहुत ही खेल दिखाते हैं। खुदा दोस्त —

बादशाह क्या करते थे। इस पर भी कहानी है। पूल पर जो आता था उनको एक दिन राजाई दे रवाना कर देता था। यह सभी है कहानियां। अभी बाप बैठ समझाते हैं खुदा तुम बच्चों का दोस्त भी है। इनमें प्रवेश कर तुम्हारे साथ खाते-पीते हैं। खेलते भी हैं। शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा का रथ एक ही है। तो जरूर शिव बाबा भी खेल तो एकते होंगे ना। बाप को याद कर खेलते हैं तो दोनों इसमें ही है। है तो दोनों। बाप और दादा। परन्तु यह कोई भी समझते नहीं। कहते हैं रथ पर आये। वह तो फिर घोड़ागाड़ी का रथ बना दिया है। ऐसे भी नहीं कहेंगे कृष्ण में शिवबाबा ज्ञान देते हैं। वह फिर कहते हैं कृष्ण भगवानुवाच। ऐसे तो नहीं कहते हैं ब्रह्मा भगवानुवाच। नहीं यह है रथ। शिवभगवानुवाच। बाप बैठ तुम बच्चों को अपना और अपनी रचना के आदि मध्य अन्त का परिचय, डिरेक्शन बताते हैं। जो बात कोई भी नहीं जानते। सैन्सीबुल जो होंगे वह बुधि से काम लेंगे। सन्यासियों को गीता का कुछ भी पता नहीं है। ऐसे तो नहीं शंकराचार्य ने गीता सुनाई है। उनके आगे भी तो गीता पढ़ते होंगे। हिन्दु तो सन्यासियों से भी आगे है ना। द्वापर शुरू हुआ और हिन्दुधर्म शुरू हुआ। पतित बने हैं तो देवता कहला न सके। हिन्दु है पतित धर्म। देवतायें हैं पावन धर्म। वही देवतायें पतित बने हैं फिर हिन्दु बन गये। फिर पूजा भी शुरू की। गीता भी उस समय बनती है। बाप कहते हैं वास्तव में सन्यासियों को गीता पढ़ने का हक नहीं। वह तो जंगल में चले जाते हैं। ब्रह्म में लीन होने लिये ब्रह्मा को ही याद करते हैं। वह है तत्वज्ञानी ब्रह्मज्ञानी। तुमको शास्त्रों आदि सभी का सन्यास करना है। तुम सभी का सन्यास करते हो ना। शरीर का भी सन्यास। यह तो पुराने खेल है। हमको तो अभी नई दुनिया में जाना है। हम आत्मा यहां रहने वाली नहीं हैं। यहां पार्ट बजाने आई हैं। हम रहवासी परमधाम के हैं। यह भी तुम जानते हो वहां निराकारी झाड़ कैसा है। सभी आत्मायें वहां रहती है। यह भी अनादि ड्रामा बना हुआ है। कितनी जीवात्मायें हैं। 500 सौ करोड़। इतने सभी कहां रहती हैं। निराकारी दुनिया में। बाकी यह तारे कोई आत्मायें तो नहीं हैं। मनुष्यों ने इन तारों को भी देवता कह दिया है। परन्तु वह कोई देवता है नहीं। यह सब मुर्खताहै ना। ज्ञान सूर्य तो हम शिव बाबा को कहेंगे। तो उनको फिर देवता थोड़ेही कहेंगे। शास्त्रों में तो क्या2 बातें लिख दी है। यह सब भक्ति मार्ग की सामग्री है। जिससे तुम नीचे ही गिरते आये हो। 84 जन्म लेंगे तो जरूर नीचे ही उतरेंगे ना। अभी यह है ही आयरनएजेड दुनिया। सतयुग को कहा जाता है गोल्डेन एजेड दुनिया। वहां कौन रहते थे। देवतायें। वह कहां गये यह किसको भी पता नहीं है। समझते भी हैं पुनर्जन्म लेते हैं। बाप ने समझाया है पुनर्जन्म लेते2 देवतायें से बदल हिन्दु बन गये हैं। पतित बने हैं ना। और किसका भी धर्म नहीं बदलता है। इन्हों का धर्म क्यों बदली हुआ किसको भी पता नहीं। हिन्दु नाम क्यों रखा गया है बाप समझाते हैं। धर्मभ्रष्ट कर्म भ्रष्ट हो गये हैं। देवी देवतायें थे तो पवित्र जोड़ी थी। फिर रावण राज्य में तुम अपवित्र बन गये हो तो देवी देवता कहला नहीं सकते हो। इसलिये ड्रामा अनुसार नाम पड़ गया है हिन्दु। देवी देवता धर्म भगवान ने नहीं स्थापन किया है शिव बाबा ने ही आकर किया होगा। वह शिवजयन्ति शिवरात्रि भी मनाई जाती है परन्तु उसने क्या आकर किया यह किसको भी पता नहीं। एक शिवपुराण भी है। वास्तव में तो शिव की एक गीता ही है जो शिव बाबा ने सुनाई। और कोई शास्त्र है नहीं। महाभारत आदि भी झूठा है। तो कोई हिंसा तुम नहीं करते हो। तुम्हारा कोई शास्त्र तो बनता ही नहीं। तुम नई दुनिया में चले जाते हो। सतयुग में कोई भी शास्त्र गीता आदि कुछभी नहीं होती। वहां कौन पढ़ेंगे। वह तो कह देते हैं यह वेद शास्त्र आदि परम्परा से चले आये हैं। उन्हों को कुछ भी पता नहीं है। स्वर्ग में कोई भी शास्त्र आदि होते ही नहीं। बाप ने तो देवता बनादिया। सभी की सदगति हो गई। फिर शास्त्र पढ़ने की क्या दरकार है। वहां होते ही नहीं। भक्ति मार्ग में तो मनुष्यों की बुधि में पत्थर डाल दिया है कि कल्प लाखों वर्ष का है। एकदम बुधि को ताला लगा दिया है। अभी फिर बाप ने ज्ञान की चाभी दी है। तो तुम्हारा ताला खुला है।

अभीतुम ज्ञान भरते हो जिससे तुम 2। जन्म सुख पाते हो। सभी को यही समझाओ सतयुग में अपरमअपार सुख है। अभी तो है अपरमअपार दुःख। माया का भभका है। तो समझते हैं यह स्वर्ग गांधी ने स्थापन किया। परन्तु गांधी से पहले यह बत्तियां आदि थी। साहुकार लोग कब ज्ञानउठा न सकेंगे। बाप भी है गरीबनिवाज। यहां आवेंगे भी साधारण। लाख तो आजकल साधारण ही है। करोड़पति कम आवेंगे नहीं। हां पिछाड़ी में आवेंगे। फिर इतना धारणा कर न सके। योगसीख न सके। बाप कहते हैं मैं भी पक्का शराफ हूं। हम इतना लेवें ही क्यों जो फिर भक्त देना पड़े। इतना पैसा वा मकान आदि लिया नहीं जाता। यह है ही गरीबों के लिये। गरीब साहुकार बनेंगे, साहुकार गरीब बनेंगे। यह राजाएं सन्यासी आदि पीछे आवेंगे। अभी आ जाये जो बहुत ही रावबेलशा हो जाये। कोई बड़ा सन्यासी आदिकह दे कि यह राईट है तो तुम्हारे पास ढेर आ जाये। तुम खुद ही मुंझ जाओ। लेने वाले की क्यु लग जावेगी। परन्तु ऐसा कायदा नहीं है। जब उन्हीं के आने का समय होता है तो लड़ाई शुरु हो जाती है। गरीब ही बहुत आवेंगे। साहुकार बहुत थोड़े आवेंगे। बच्चो को पुरुषार्थ कर अवस्था ऐसी बनानी है जो पिछाड़ी में कुछ भी याद न आये। कहते हैं ना गंगा का तट हो, गंगा जल मुख में हो तब प्राण तन से निकले। हरिद्वार बनारस में ढेर मनुष्य जाकर बैठते हैं। सारा कंठा ही सन्यासियों से भरा हुआ है। बस मुख से यही कहते रहते शिवकाशी विश्व नाथ गंगा। तुमको यहां कुछ भी कपड़ आदि बदलनी नहीं हैं। तुम तो गृहस्थ व्यवहार में रहने वाले हो। बाबा तो कब कहा नहीं है यह कपड़े पहनो। हां शुरु में तुम भट्ठी में थे तब सफेद ड्रेस रखे थे। पाकिस्तान में खुदाई प्रस्त समझते थे। यह सफेद है ना माया का कोई दाग नहीं। काम क्रोध लोभ मोह यह सभी माया के दाग है ना। सफेद पर कोई दाग नहीं। तुम से यह सभी दाग निकलनीहै। बाबा कह देते हैं यहां जेवर आदि कुछ भी पहन कर नहीं आओ। आजकल चोराकारी बहुत है। बड़े2 बैंक में भी अन्दर घुस चले जाते हैं। स्वर्ग में ऐसी कोई बात होती ही नहीं। यहां तो अपार दुःख है। कदम कदम पर दुःख है। बाबा के ज्ञान में कदम कदम पर पदम है। यहां वे तुम भविष्य पदमपति बनने आते हो। नम्बरवार पदमापति बनते हो सो भी 2। जन्मों के लिये। तो ऐसे बाप को फिर भूल क्यों जाते हो। बाप को भूलेंगे तो फिर हिस्सा कम मिलेगा। परन्तु माया घड़ी2 भूला देती है। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो। सिवाय एक बाप के और सभी दुःख देने वाले हैं। अभी कोई पास भल पैसा है कल दिवाला मार दे कोई ले जाये तो कितना दुःख होगा। कईयों को तो हार्ट फेल भी हो जाते हैं। यहां तो अपार दुःख है। बहुत पैसे वाले समझते हैं यहां दुःख कहां है। परन्तु अभी तुम समझते हो यह है अल्पकाल का सुख। जैसे सन्यासी कहते हैं काग बिष्टा समान सुख है। अभी तुम समझते हो यह है अल्पकाल का सुख। विनाश सामने खड़ा है। इसलिये बाप कहते हैं तुमको नई दुनिया में अपरमअपार सुख मिलते हैं। यह तुम भेलो मत। तुमको कितना अथाह सुख मिलता है। बेहद के बाप को कब न भूलना चाहिए। परन्तु माया भूला देती है। यह बाबा भी कहते हैं भूल जाते हैं। जानता हूं हमारे बाजु में बैठे हैं लगो लग तो भी भूल जाता हूं। कोशिश करता हूं याद में भोजन खाऊं। खाते2 फिर भूल जाता हूं। अगर अभी न भूलूं तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। परन्तु वह अवस्था होनी है पिछाड़ी में। अभी तो शरीरिक रोग खांसीआदि भी होती है। निरन्तर बाबा को याद कर नहीं सकता हूं। कर्मातीत अवस्था तो नम्बवार ही सभी की होगी। कर्मातीत अवस्था हो जावेगी। याद की यात्रा है मुख्य। इसमें गफलत न करनी चाहिए। याद से ही सतोप्रधान श्रेष्ठ बनेंगे। शिव बाबा की याद से ही बेड़ा पार होगा। अच्छा मीठे2 सिकील धे रूहानी बच्चों प्रित रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

डायरेक्शन :- लखनऊ में जो नया सेन्टर ए०पी० सेना रोड पर लिया गया था वह मकान अभी छोड़ दिया है।

****